6 अक्टूबर 2024

पिन्तेकुस्त के बाद 20वाँ रविवार

प्रेरित थोमा के लिए धन्यवाद, जिसका सन्देह विश्वास में बदल गया

अय्यूब अध्याय 42 वचन 1 से लेकर 6 तक

भजन संहिता अध्याय 40 वचन 1 से लेकर 5 तक

पहला पतरस अध्याय 3 वचन 1 से लेकर 9 तक

यूहन्ना अध्याय 20 वचन 24 से लेकर 29 तक

मुख्य वचन: "धन्य हैं, वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।" (यूहन्ना अध्याय 20 वचन 29)

मसीह में प्यारों, आज हम अपने विश्वास के एक गहन पहलू पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जिसे अक्सर अनदेखा किया जाता है: यानी संदेह से विश्वास की ओर यात्रा करना। जब हम प्रेरित थोमा को याद करते हैं, जिसे अक्सर उसके संदेह के लिए याद किया जाता है, तो हम यह पता लगाएंगे कि कैसे उसका संदेह एक गहरे, अटूट विश्वास में बदल गया। आज हमारे लिए ठहराए गए पाठ, अय्यूब की पुस्तक, भजन संहिता, पतरस का पहला पत्र और यूहन्ना के सुसमाचार, इस विषय को बड़ी खूबसूरती से उजागर करते हैं। संदेह एक विश्वव्यापी अनुभव है; हम सभी ऐसे क्षणों का सामना करते हैं, जब हमारे विश्वास को चुनौती दी जाती है, चाहे वह जीवन की कठिनाइयों हों, अनुत्तरित प्रार्थनाओं हों या फिर हमारे अस्तित्व के रहस्यों के कारण ही क्यों न हों। इन क्षणों में, हम थोमा के जीवन और बाइबल के उन संदर्भों से प्रोत्साहन और प्रेरणा पा सकते हैं, जिन पर आज हम मनन करेंगे। आइए हम पवित्रशास्त्र को गहराई से पढ़ें और जानें कि कैसे संदेह वास्तव में विश्वास की गहरी समझ और अनुभव की ओर ले जा सकता है।

पहला विचार. परमेश्वर की प्रभुता का आश्वासन (अय्यूब अध्याय 42 वचन 1 से लेकर 6 तक)

हमारे पहले पाठ में अय्यूब, हम दुःख और संदेह में चलती हुई अय्यूब की यात्रा को एक सामर्थी मंजिल पर पहुँचते हुए देखते हैं। अत्याधिक नुकसान और निराशा को सहने के बाद, अय्यूब एक अद्भुत तरीके से परमेश्वर से मुलाकात करता है। अय्यूब अध्याय 42 वचन 1 से लेकर 6 तक में, हम पढ़ते हैं: "अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। तू ने पूछा, 'तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?' परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। तू ने कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, तू मुझे बता।' मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।" यहाँ, अय्यूब परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करता है। उसके शुरुआती प्रश्नों और संदेहों का उत्तर ईश्वरीय प्रकाशन में मिलते हैं, जो उसे पश्चाताप और नम्रता के स्थान पर ले जाते हैं। संदेह से विश्वास

की ओर जाना परिवर्तन को दिखाता है कि प्रश्न करना अंत में हमें परमेश्वर के साथ एक गहरे रिश्ते की ओर ले जा सकता है। एक छोटे बच्चे पर ध्यान लगाएँ, जो एक कठिन चुनौती का सामना करते हुए, अपनी क्षमताओं पर संदेह व्यक्त करता है। लेकिन जब उसे चुनौती के माध्यम से प्रोत्साहित और निर्देशित किया जाता है, तो वे अक्सर न केवल सफल होते हैं, बल्कि नए आत्मविश्वास के साथ उभर कर सामने आते हैं। इसी तरह, अय्यूब की यात्रा दिखाती है कि हमारे संदेह और संघर्षों के माध्यम से, हम परमेश्वर को और अधिक निकटता से जान सकते हैं।

दूसरा विचार. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही (भजन संहिता अध्याय **40 वचन 1 से लेकर 5 तक**)

आज का हमारा भजन धन्यवाद और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की स्वीकृति के इसी विषय को पुष्ट करता है। भजन संहिता अध्याय 40 वचन 1 से लेकर 5 तक में हम सुनते हैं: "मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो यहोवा पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेवालों की ओर मुँह न फेरता हो। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत से काम किए हैं! जो आश्चर्यकर्म और कल्पनाएँ तू हमारे लिये करता है वह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं! मैं तो चाहता हूँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती।" भजनकार कृतज्ञता से भरे भाव में यह स्वीकार करते हुए बोलता है कि परमेश्वर सहायता और उद्धार का स्रोत रहा है। जब हम अपने संदेहों और डरों पर विचार करते हैं, तो हम उन उदाहरणों को भी याद कर सकते हैं, जिनमें परमेश्वर ने हमारे साथ विश्वासयोग्यता के साथ चलते हुए, हमारे संघर्षों को अपनी भलाई की गवाही में बदल दिया है। अपने जीवन के उन क्षणों के बारे में सोचें, जिसमें आपने अनिश्चितता या संदेह का सामना किया है। क्या आपको उन समयों के दौरान परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की झलक देखने के लिए नहीं मिली? जैसे भजनहार ने परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों का उल्लेख किया है, वैसे ही हमारा जीवन भी परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही से भरा हुआ है, जो हमारे संदेह को स्तुति में बदल सकता है।

तीसरा विचार. अपने विश्वास को जीने की बुलाहट (पहला पतरस अध्याय 3 वचन 1 से लेकर 9 तक)

पहले पतरस के पत्री में, हम मसीह के प्रेम को दिखाई देने वाले तरीके से अपने विश्वास को जीने का बुलाहट पाते हैं। पतरस विश्वासियों को अपनी आशा के लिए उत्तर देने के लिए तैयार रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। पहले पतरस अध्याय 3 अध्याय 1 से लेकर 9 तक में, हम पढ़ते हैं: "हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो, इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपनी–अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएँ...वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो...अत: सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।" यह अनुच्छेद हमें याद दिलाता है कि हमारे कार्य हमारे विश्वास के लिए एक धरोहर के रूप में काम कर

सकते हैं, यहां तक कि संदेह की स्थिति में भी। प्रेम, करुणा और विनम्रता के माध्यम से अपने विश्वास को जीने से ऐसा माहौल बन सकता है, जिसमें संदेह के ऊपर बातचीत की जा सकती है और इसे बदला जा सकता है। गुटबाजी या संघर्ष का सामना कर रहे समुदाय पर विचार करें। जब एक व्यक्ति क्रोध या आक्रोश के बजाय प्रेम और अनुग्रह के साथ प्रतिक्रिया करना चुनता है, तो इससे सुलह हो सकती और चंगाई आ सकती है। हमारा विश्वास न केवल हमारे मान्यताओं में बल्कि हमारे कार्यों में भी व्यक्त होता है, जो दूसरों को मसीह की ओर आकर्षित कर सकता है।

चौथा विचार. संदेह का विश्वास में परिवर्तन (यूहन्ना अध्याय 20 अध्याय 24 से लेकर 29 तक)

अंत में, हम यूहन्ना के सुसमाचार पर पहुँचते हैं, जहाँ हमें थोमा का विवरण मिलता है, जिसे अक्सर "संदेह करने वाला थोमा" कहा जाता है। यूहन्ना अध्याय 20 अध्याय 24 से लेकर 29 तक में, हम पढ़ते हैं: "परन्तु बारहों में से एक, अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था। जब अन्य चेले उससे कहने लगे, “हम ने प्रभु को देखा है,” तब उसने उनसे कहा, “जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ, और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।” आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था; और द्वार बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच में खड़े होकर कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।” तब उसने थोमा से कहा, “अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।” यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!” यीशु ने उससे कहा, “तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिये विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।” इस अनुच्छेद में, हम थोमा के संदेह से विश्वास में परिवर्तित होते देखते हैं। जब यीशु प्रकट होता है, तो वह थोमा को अपने घावों की जांच करने के लिए आमंत्रित करता है, जो थोमा के संदेह को एक ठोस उत्तर प्रदान करता है। यह क्षण न केवल थोमा के विश्वास की पुष्टि करता है, बल्कि एक स्मरण रखे जाने वाले कार्य के रूप में भी काम करता है कि संदेह यात्रा का अंत नहीं है; यह परमेश्वर के साथ एक गहरे रिश्ते के लिए एक कदम हो सकता है। संदेह विश्वास के विपरीत नहीं है; यह विकास के लिए प्रेरणादायी हो सकता है। जब हम खुद को अपने संदेहों का सामना करने की अनुमति देते हैं, तो हमें वह आश्वासन और प्रमाण मिल सकता है, जिस पर हमें अधिक गहराई से विश्वास करने की आवश्यकता है। जिस तरह यीशु के साथ थोमा की मुलाकात ने उसे बदल दिया था, ठीक उसी तरह मसीह के साथ हमारी मुलाकातें हमारे संदेहों को विश्वास में बदल सकती हैं। प्रेरित थोमा, जिन्हें अक्सर "संदेह करने वाला थोमा" कहा जाता है, नए नियम में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, जो विशेष रूप से यीशु के पुनरुत्थान के बारे में अपने शुरुआती संदेह के लिए जाना जाता है। यहाँ उसके जीवन और आरंभिक मसीही समुदाय में उसकी भूमिका के बारे में कुछ मुख्य बातें दी गईं हैं:

पहला. पहचान और पृष्ठभूमि

• **नाम:** थोमा को अरामी नाम "दिदुमुस" से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ "जुड़वां" से है। इसके अलावा बाइबल उसके परिवार या पृष्ठभूमि के बारे में अधिक जानकारी नहीं देती है।

• **यीशु का शिष्य:** वह यीशु द्वारा चुने गए बारह प्रेरितों में से एक था, और उसने मसीह की सेवकाई में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दूसरा. व्यक्तित्व संबंधी गुण

• **संदेही फिर भी विश्वासयोग्य:** यीशु के पुनरुत्थान के बारे में अपने संदेह के कारण थोमा को अक्सर संदेही के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, उसे एक विश्वासयोग्य और प्रतिबद्ध अनुयायी के रूप में भी चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना अध्याय 11 वचन 16 में, जब यीशु यहूदिया लौटने का निर्णय लेता है, तो थोमा उसके साथ जाने की इच्छा व्यक्त करता है, भले ही इसका मतलब मौत का सामना करना क्यों न हो।

तीसरा. पुनरुत्थान का सामना

• **संदेह और विश्वास:** थोमा से जुड़ी सबसे उल्लेखनीय कहानी यूहन्ना अध्याय 20 वचन 24 से लेकर 29 तक में मिलती है। यीशु के पुनरुत्थान के बाद, वह अन्य शिष्यों के सामने प्रकट होता है, लेकिन थोमा वहाँ मौजूद नहीं होता। जब वे उसे जी उठे हुए मसीह के बारे में बताते हैं, तो वह संदेह के साथ जोर देकर कहता है कि जब तक वह यीशु के घाव नहीं देख लेता, तब तक वह विश्वास नहीं करेगा। जब यीशु बाद में प्रकट होता है और थोमा को अपने घावों को छूने के लिए आमंत्रित करता है, तो थोमा विश्वास की एक गहरी घोषणा के साथ जवाब देता है: "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" यह क्षण थोमा के लिए संदेह से विश्वास की ओर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को चिह्नित करता है।

चौथा विचार. धर्म-वैज्ञानिक महत्व

• **धन्य हैं वे जो विश्वास करते हैं:** थोमा को यीशु की प्रतिक्रिया मसीही विश्वास में एक महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विषय को उजागर करती है: बिना देखे विश्वास करना। वह कहता है, "धन्य हैं, वे जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास किया।" यह विश्वासियों को भौतिक प्रमाण के बजाय विश्वास और दृढ़ कायलता के आधार पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

• **संदेह का प्रतीक:** थोमा विश्वास के साथ-साथ संघर्ष का भी प्रतिनिधित्व करता है, जिसका सामना कई विश्वासी करते हैं। उसकी कहानी उन लोगों के साथ मेल खाती है, जो संदेह करते हैं, उन्हें यह आश्वासन मिलता है कि प्रश्न पूछना और खोजबीन करना विश्वास की यात्रा का हिस्सा है।

पाँचवा. विरासत

• **प्रेरिताई संबंधी मिशन:** परंपरा के अनुसार, थोमा ने सुसमाचार फैलाने के लिए भारत की यात्रा की, जहाँ उसे संत थोमा के द्वारा स्थापित कलीसिया यानी चर्च ऑफ़ द थोमा क्रिस्चियन यानी की स्थापना का श्रेय दिया जाता है, जिसे सीरियाई क्रिस्चियन के रूप में भी जाना जाता है। उसके मिशनरी कार्य का एक स्थायी प्रभाव था, और उसे विभिन्न मसीही संप्रदायों में एक संत के रूप में सम्मानित किया जाता है।

• **पर्व दिवस:** पश्चिमी कलीसियाओं में, थोमा के नाम से पर्व को 3 जुलाई को मनाया जाता है, जबकि पूर्वी रूढ़िवादी कलीसियाओं में, उसका पर्व पास्का अर्थात् (ईस्टर) के बाद पहले रविवार को मनाया जाता है।

छठवाँ. विश्वासियों के लिए प्रोत्साहन

• **संदेह को अपनाना:** थोमा की कहानी मसीहियों को प्रोत्साहित करती है कि संदेह गहरे विश्वास के लिए एक मार्ग हो सकता है। उसके शुरुआती संदेह ने उसे प्रेरित होने से अयोग्य नहीं ठहराया; इसके बजाय, इसने मसीह से होने वाली उसकी मुलाकात की बदल देने वाली सामर्थ्य को उजागर किया।

• **संदेह करने वालों के लिए आशा:** जो लोग खुद को विश्वास के साथ संघर्ष करते हुए पाते हैं, उनके लिए थोमा एक यादगारी के रूप में कार्य करता है कि परमेश्वर हमारे संदेहों में हमसे मुलाकात करता है और चाहता है कि हम समझ और विश्वास की खोज करें।

संक्षेप में कहना, प्रेरित थोमा की संदेह से विश्वास की ओर यात्रा उन संघर्षों का उदाहरण है, जिनका सामना कई लोग अपने आत्मिक जीवन में करते हैं। उसकी कहानी हमें अपने प्रश्नों को स्वीकार करने, परमेश्वर से मिलने की खोज करने और अंत में उन अनुभवों के द्वारा अपने विश्वास को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

इस सन्देश का सार

जब हम थोमा के जीवन पर मनन करते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि संदेह हमारी विश्वास की यात्रा का एक स्वाभाविक हिस्सा है। जिस तरह अय्यूब ने परमेश्वर की प्रभुता की खोज की, भजनकार ने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का उत्सव मनाया और पतरस ने हमें अपने विश्वास को जीने के लिए प्रोत्साहित किया, थोमा की कहानी हमें दिखाती है कि हमारे संदेह गहरे विश्वास की ओर ले जा सकते हैं। अपने जीवन में, हमें अपने संदेहों से दूर नहीं भागना चाहिए बल्कि उन्हें परमेश्वर के पास यह विश्वास करते हुए लाना चाहिए कि वह हमारे प्रश्नों में हमसे मुलाकात करेगा। आइए हम थोमा की घोषणा, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर" को दोहराएँ, क्योंकि हम मसीह की उपस्थिति के आश्वासन के द्वारा अपने विश्वास को गहरा करते हैं। आज के उपदेश का समापन करते हुए, आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें:

आइए हम प्रार्थना करें

हे स्वर्गीय पिता, हम आपको विश्वास के वरदान और हमसे पहले के लोगों के उदाहरणों के लिए धन्यवाद देते हैं। प्रेरित थोमा के लिए और जिस तरह से उसके संदेह ने विश्वास की गहन पुष्टि की, उसके लिए धन्यवाद देते हैं। हमें अपने संदेह आपके सामने लाने में मदद यह जानते हुए करें कि आप एक ऐसे परमेश्वर हैं, जो हमारी अनिश्चितता में हमसे मुलाकात करते हैं। हमारे मनों को मजबूत करें, हमारी आत्माओं को प्रोत्साहित करें, और हमारे विश्वास को गहरा करें, क्योंकि हम आपका और अधिक निकटता से अनुसरण करना चाहते हैं। हम अपने जीवन में आपकी विश्वासयोग्यता के लिए कृतज्ञता से भरे रहें, और हम दूसरों के साथ आपकी आशा को साझा करें। यीशु के नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।